❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 47, अंक 7 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 01 जनवरी, 2024 से रविवार 07 जनवरी, 2024
विक्रमी सम्वत् 2080 सृष्टि सम्वत् 1960853124
दयानन्दाब्द : 200 पृष्ठ 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें -www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के अवसर
MMTC द्वारा शुद्ध चांदी के विशेष सिक्के
999.9 टंच 10 ग्राम MMTC के प्रमाणपत्र सहित
आकर्षक पैकिंग में उपलब्ध
प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें 9650183336, 9540040339

चलो टंकारा! चलो टंकारा!! चलो टंकारा!!!

10-11-12 फरवरी, 2024 को जन्मभूमि टंकारा में होगा
ऐतिहासिक, अद्भुत, अनुपम और अद्वितीय
200वीं जयन्ती-ज्ञान ज्योति पर्व-स्मरणोत्सव महासम्मेलन

चलो टंकारा! ऋषि हमारा - दयानन्द प्यारा - चलो टंकारा - चलो टंकारा चलो टंकारा!

स्मरणोत्सव की तैयारियों के लिए टंकारा में आयोजन समिति की बैठक : जिम्मेदारियों का वितरण एवं व्यवस्थाओं हेतु आयोजन स्थल का दौरा
पूरे टंकारा क्षेत्र, गुजरात प्रांत, भारत और विदेशों में अपार उत्साह की लहर

यह सर्व विदित ही है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती और आर्य समाज के 150वें स्थापना दिवस के दो वर्षीय आयोजनों का शुभारम्भ भारत के यशस्वी प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा अत्यन्त हर्षोल्लास के वातावरण में 12 फरवरी 2023 को इंदिरा गाँधी स्टेडियम नई दिल्ली में अपनी अपार सफलताओं के साथ सम्पन्न हुआ था। ज्ञात हो 12 फरवरी 2023 को सम्पूर्ण आर्यजगत ने महर्षि का 199वां जन्मोत्सव मनाया था। लेकिन 12 फरवरी 2024 को महर्षि की 200वीं जयन्ती है, अत: वह तो दो वर्षीय आयोजनों का शुभारम्भ था। तब से लेकर अब तब लगभग एक वर्ष में विश्वव्यापी आर्य समाज द्वारा भारत के कोने-कोने में और विदेशों में हजारों कार्यक्रम अपार सफलताओं के साथ सम्पन्न हुए हैं। जिनमें महर्षि दयानन्द जी की शिक्षाओं

टंकारा पहुंचने वाले प्रत्येक महानुभाव अपना रजिस्ट्रेशन कराकर व्यवस्थाओं में सहयोगी बनें
http://tinyurl.com/28m68mfj

स्टाल बुक कराएं
टंकारा में साहित्य प्रकाशकों एंव पुस्तक विक्रेताओं हेतु 2100/- रुपये में स्टाल उपलब्ध कराया जाएगा। राशि का चैक **'महर्षि दयानन्द सरस्ती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा'** भेजे। अधिक जानकारी के लिए स्टाल व्यवस्थापक श्री संजीव आर्य (9868244958) से सम्पर्क करें।

- सम्बन्धित समचार एवं सूचनाएं पृष्ठ 3-4-5 एवं 7 पर

जन्म शताब्दी समारोह में हुए थे सम्मिलित अब 200वीं जयन्ती के स्मरणोत्सव में भी होंगे शामिल
महर्षि दयानन्द जी की बहिन के परिवारजनों को दिया निमन्त्रण

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर आयोजित ज्ञान ज्योति पर्व - स्मरणोत्सव समारोह -10-11-12 फरवरी का निमन्त्रण स्वामी जी की बहिन प्रेमा बेन की छठी पीढ़ी - श्री पार्थ रावल, उनकी धर्मपत्नी एवं सुपुत्र को प्रदान करते सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं श्री वाचोनिधि आर्य जी जी। श्री पार्थ रावल जी, श्रीमती प्रेमा बेन जी के पुत्र श्री बोधा जी के पुत्र श्री कल्याण जी के पुत्र श्री पोपटलाल जी के पुत्र श्री जयन्ती भाई जी के सुपुत्र हैं।

देववाणी-संस्कृत

विद्यादेवी की महिमा

वेद-स्वाध्याय

यदाशसा वदतो मे विचुक्षुभे यद् याचमानस्य चरतो जनाँ अनु।
यदात्मनि तनवो मे विरिष्टं सरस्वती तदा पृणद् घृतेन।। - अथर्व. 7/57/1
ऋषिः **वामदेवः।।** देवता - **सरस्वती।।** छन्दः **जगती।।**

शब्दार्थ- जनान् अनुचरतः = मनुष्यों की सेवा करते हुए **आशसा वदतः** = उनके साथ आशा से बोलते हुए, भाषण करते हुए, **मे** = मेरा **यत्** = जो मन कभी- कभी **विचुक्षुभे** = विक्षोभ को प्राप्त होता है और **याचमानस्य** = लोगों के हित के लिए उनसे प्रार्थना करते हुए या भिक्षा करते हुए **यत्** = जो मेरा मन विक्षोभ को प्राप्त होता है तथा **आत्मनि तन्वः** = अपने अन्दर अन्तःशरीर पर, अन्तःकरण पर **मे यत् विरिष्टम्** = मुझे जो चोट पहुंचती है, घाव होते हैं **तत्** = उस सबको **सरस्वती** = विद्यादेवी **घृतेन** = अपने ज्ञानपूर्ण और स्नेहमय मरहम से **आपृणात्** = भर दे, पर दे।

विनय- सार्वजनिक जीवन बिताना बड़ा कठिन है। बिल्कुल निःस्वार्थ भाव से लोक सेवा करते हुए भी बहुत बार जो कुछ सुनना पड़ता है और जो कुछ व्यवहार सहना पड़ता है उससे मन प्रायः विक्षुब्ध हो जाता है, हृदय को भारी चोट पहुंचती है। कई बार तो इनसे मन इतना खिन्न हो जाता है कि लोकसेवा छोड़ देना ही ठीक लगता है, परन्तु हृदयवासिनी सरस्वती देवी का ध्यान करके मैं रुक जाता हूं। मैं यह जानता हूं कि यदि मैं सचमुच सर्वथा निःस्वार्थ हूं, सच्चा सेवक हूं तो ऐसे भारी-से-भारी विक्षोभ और चोटें भी मेरे लिए क्षणिक हैं और ये मेरी आत्मविशुद्धि करने वाली और मुझे बलवान् बनाने वाली ही हैं। ऐसी चोटें लगने पर ज्यों ही मैं कछ देर के लिए अपने हृदयमन्दिर में बैठकर आत्मचिन्तन कर लूंगा तो अन्दर कीज्ञानमयी स्नेहस्वरूपिणी सरस्वती देवी की कृपा से मेरी ये चोटें क्षण में ठीक हो जाएंगी और मैं तब अपने को पहले से अधिक पवित्र तथा अधिक बलवाान् भी पाऊंगा। सरस्वती देवी केपास वह घृत है, ज्ञान और स्नेह का वह अद्‌भुत मरहम है, शान्ति और प्रफुल्लता देने वाला वह स्निग्ध ज्ञान है जिससे कि सच्चे पुरुष के सब घाव आत्मचिन्तन करने से जादू की भांति तनिक-सी देर में बिल्कुल ठीक हो जाते हैं। मनुष्य आत्मस्वरूप को सदा स्मरण न रख सकने के कारण ही विक्षुब्ध व व्याकुल हो जाता है। अतएव विचार व आत्मचिन्तन कर लेने से देखा जाता है कि मनन करने वाले के भारी-से-भारी मानसिक आघातों की पीड़ा भी बहुत-कुछ उसी समय चली जाती है। यद्यपि नाना प्रकार की सद्-आशाओं के भङ्ग हो जाने-से या भलाई के बदले घोर अपमान व आपत्ति मिलने से मेरा आन्तरिक, मानसिक शरीर चूर-चूर हो जाता है, क्षत-विक्षत हो जाता है, तथापि हे सरस्वती देवी! मेरी प्रार्थना है कि तुम सदा उन सब मेरे घावों को अपनी इस स्नेह-रसमयी चैतन्यकारिणी शान्तिदायिनी दिव्य मरहम से जादू की भांति भरकर ठीक करती रहो।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती : नशा हटाओ-यौवन बचाओ

सोशल मीडिया पर भी सज रही है पाखण्ड की दुकान

जब हम इन्स्टा, यूट्यूब या फेसबुक पर विडियो देख रहे होते हैं तो अचानक कुछ विडियो हमारे सामने आ जाते हैं, जिनमें कोई माता का रूप धारण कर चिलम या सिगरेट फूंक रही होती है, या कोई बाल बिखेरकर खुद के सिर माता आ जाने का दावा कर रही होती है। कोई झाड़ू या मोरपंख से झाडा लगा रही होती है। या फिर कोई पीत या गेरुए वस्त्र धारण कर किसी बीमार महिला पर अत्याचार कर रहा होता है। आस्था के नाम पर आये दिन ऐसा चल रहा है। माता का सिर आना, भूत-प्रेत जिन्न का यह कारोबार इतने अन्दर तक समा चुका है कि आज अस्पताल से अधिक मजार और इलाज से अधिक चंगाई सभा चल रही हैं।

मजारों पर लोगों के सिर आये जिन्न भगाए जा रहे हैं तो कई मन्दिरों के नाम पर भूत भगाए जा रहे है। चर्च वाला गैंग दुष्ट आत्माओं को भगा रहा है तो माता की चौकी लगाकर अनेकों कथित माताएं सिर आत्मताएं भगा रही है। इन सब को देखकर लगता है जैसे भारत की एक अरब 40 करोड़ जनसँख्या के बीच कोई दो अरब भूत-प्रेत, बुरी आत्माएं, जिन्न-पिचास भी रह रहे हैं। बस उनका आधार कार्ड या वोटर आई कार्ड नहीं है वरना वो भूत-प्रेत-जिन्न चुनाव भी लड़ रहे होते और सरकार बना और गिरा रहे होते।

जिस देश में कभी ईश्वर की स्तुति, संध्या हवन हुआ करते थे। अब उस देश में आस्था के नाम डर और भय बनाकर इतना बड़ा कारोबार खड़ा कर दिया गया है कि आम जन मानस अब कब किसका शिकार बन रहा है किसी को पता नहीं। पति को छोड़कर घर से भागी एक महिला ढोंग और पाखंड के दम पर रातों-रात राधे माँ बन जाती है। तो आसिफ नाम का मुस्लिम आसू महाराज बनकर करोडों में खेलने लगता है। ना केवल खेलता है बल्कि हिन्दू महिलाओं की आबरू भी लूटता है।

आप बस में सफ़र करते होंगे कभी शहर में घूमते हुए तो कभी ऑनलाइन सत्संग करते वक्त ऐसे बाबाओं के विज्ञापन आपने भी खूब देखे होंगे जिनमें लिखा होता है कि 'चौबीस घंटे में खोया प्यार वापस पाएं, कारोबार में रुकावट, बेरोजगारी, सौतन और दुश्मन से छुटकारा, ऐसी किसी समस्या का 100 प्रतिशत गारंटीड समाधान चाहिए तो कॉल करिए।' यही वो कॉल है जो एक बार करता है फिर फंसता ही चला जाता है।

कभी ईश्वर पर विश्वास करने वाले मजारों से लेकर बाबाओं पर काल्पनिक और ढोंगी माताओं पर बंगाली बाबाओं पर विश्वास कर रहे हैं। सोचिये अंधविश्वास कैसे सभ्य समाज में अपनी पकड़ बनाता है कोई भारत से सीखे। संस्कृत आयुर्वेद और योग, निश्चित ही महान विद्याएँ रही हैं। लेकिन मध्यकाल आते-आते संस्कृत सिर्फ मंत्रपाठ की भाषा बना दी गयी। आयुर्वेद सिर्फ कब्ज और गुप्त रोगों का इलाज बन गया। यही से पनपने लगे बाबा जो जिन्होंने अपने मन्त्र बना लिए। आस्था की आड़ में तंत्र-मन्त्र के माध्यम से रोगों के निदान का कारोबार आरम्भ कर दिया। चूँकि इनके प्रति समाज की परम्परागत आस्था रही तो इन लोगों ने उस दबी आस्था को उनके दुःख, क्लेश बीमारी आदि को अंधविश्वास का वो जामा पहनाया जब अब मासूम लोगों का जीवन लील रहा है।

थोड़े समय पहले एक मसानी बाबा नाम से दिल्ली में माता मसानी चौकी लगाया करता था। महिलाओं के मुंह में अपनी जीभ देकर इलाज करने का दावा करता था।

.....1971 बैच के आई.पी.एस. अधिकारी डीके पांडा खुद को राधा कहने लगे थे कि खुद भगवान ने सपने में आकर उनसे ये भेद खोला कि वे राधा थे। वे राधा की तरह कपड़े पहनने और श्रृंगार करने लगे, माथे पर सिन्दूर और हाथों में चूड़ियां पहनने लगे थे। ..... अब इसे आप आस्था कह लीजिये लेकिन मेडिकल साइंस की भाषा में ये पजेशन सिंड्रोम है। इस सिंड्रोम के शिकार को ये लगने लगता है कि उस पर किसी देवी-देवता का वास है। कई बार लोग भूत-पिशाच जैसी बातें करते हैं, ये भी पजेशन सिंड्रोम का ही उदाहरण है। इस अवस्था में मरीज अपने नॉर्मल व्यवहार से हटकर हरकतें करने लगता है। कई बार अपराध भी करता है और बाद में क्लेम करता है कि ये सब आत्मा या देवी-देवता ने उससे करवाया। चूँकि यह धर्म और आस्था के नाम पर होता है तो लोग स्वीकार भी कर लेते है।.....

दुखी महिलाओं से सब ठीक करने के बहाने पैसे ऐंठता था फिर मौका पाकर उनका बलात्कार करता था। इतना ही नहीं वह पीड़ित महिलाओं को बाद में ब्लैकमेल भी करता था। बाद में जब कई शिकायत थाने पहुंची तब दिल्ली पुलिस ने द्वारका से इसे गिरफ्तार किया।

दरअसल माता का जगराता चलता है सारे लोग झूम रहे होते हैं, तभी शोर सुनाई पड़ता है, कथित आस्तिक लोगों की भीड़ अचानक एक महिला के चारों ओर घेरा बना लेती है। थोड़ी देर पहले नॉर्मल लग रही वो महिला फटी हुई आवाज में बोलने लगती है। वह तेजी से झूमने भी लगती है। कुछ महिलाएं आगे बढ़कर उसके बाल खोल देती हैं। उसके माथे पर सिन्दूर की बड़ी-सी बिन्दी लगा दी जाती है। हरदम कपड़े संभालकर चलने वाली उस महिला को अब कपड़ों की सुध भी नहीं रहती। उसे सिर पर माता की चुनरी ओढ़ा दी जाती है और लोग नीचे बैठकर उसके पैर छूने लगते हैं। ऐसा कहा जाता है कि उस महिला पर देवी आ गई है। कुछ मिनटों या लगभग आधे घंटे तक देवी उसके शरीर में रहती है, फिर छू-मंतर हो जाती है।

- शेष पृष्ठ 6 पर

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती : ऐतिहासिक आयोजन –

ज्ञान ज्योति पर्व – स्मरणोत्सव महासम्मेलन के हम बनें साक्षी

मानवजाति के महान उपकारक एवं परम हितैषी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती आर्य जगत की समस्त उपलब्धियों के गौरवगान और उज्ज्वल भविष्य के लिए सत्संकल्प करने का स्वर्णिम अवसर है। सत्य के प्रकाशक, क्षमाशीलता के महान उदाहरण महर्षि का 10 से 12 फरवरी 2024 तक तीन दिवसीय विश्व स्तरीय स्मरणोत्सव का उनकी जन्मभूमि टंकारा में आयोजित होना सुनिश्चित है। सभी आर्यजनों के लिए यह स्वर्णिम अवसर है, महर्षि के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने की अमृत बेला है, महर्षि के अधूरे कार्यों को, उनके जन कल्याणकारी आंदोलनों को आगे बढ़ाने तथा सपनों को पूर्ण करने हेतु अपने मन को संकल्पित का अनुपम अवसर है। अतः भारत के कोने-कोने से और विदेशों से आर्य समाज के अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्यों सहित आर्यजन उपरोक्त तिथियों में अपने पारिवारिक, सामाजिक कार्यों से अवकाश लेकर महर्षि की जन्मभूमि टंकारा पहुंचे और आर्य समाज के इस ऐतिहासिक भव्य, विशाल और विराट आयोजन के साक्षी बनें। साथ ही महर्षि के विचारों और शिक्षाओं को उनके वैदिक उपदेश, संदेश, आदेश और निर्देशों को अपने जीवन में धारण करें और जन-जन तक पहुंचाने का हम संकल्प लें, आर्य समाज के सेवाकार्यो को आगे बढ़ाने हेतु तन-मन और धन की आहुति देकर अपने जीवन को धन्य करें। आओ, सब मिलकर चलें टंकारा, संपूर्ण विश्व में गूंजेगा, महर्षि के नाम का जयकारा

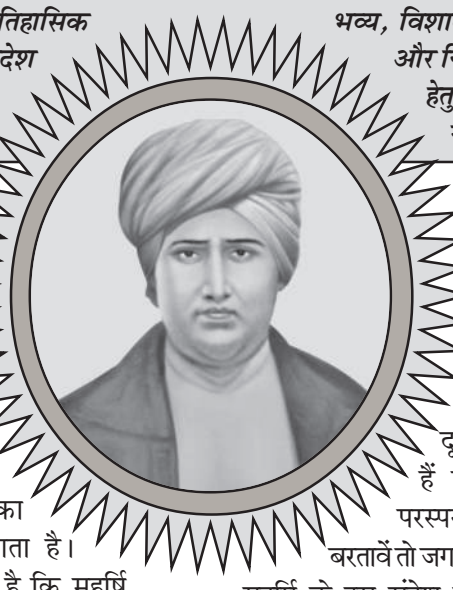

पुण्य भूमि भारत के भाग्य विधाता, आधुनिक भारत के निर्माता, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का बहुआयामी व्यक्तित्व अनुपम, अद्वितीय और विशाल था। मानव समाज के ऊपर उनके अनगिनत उपकार स्तुत्य एवं चिरकाल तक अविस्मरणीय रहेंगे। 12 फरवरी सन 1824 को टंकारा गुजरात में जन्में महर्षि का संपूर्ण जीवनवृत्त मानव समाज के सर्वांगीण विकास और उत्थान के लिए समर्पित रहा। उनके जीवन दर्शन के मूल्य सिद्धांतों को देखकर ज्ञात होता है कि उनकी निजी आवश्यकताएं तो नाममात्र की थी, एक कोपीन धारण करके भी वे अपने जीवन में संतुष्ट और आनन्दित थे। न किसी भव्य भवन में निवास करने की भावना और न किसी प्रकार के धन-धान्य की कामना, केवल उनकी यही महत्वाकांक्षा थी की संपूर्ण विश्व में वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार हो, वैदिक शिक्षाओं के अनुसार सब अपना जीवन यापन करें, सारा मानव समाज वेद का अनुयाई बने, समस्त भूमंडल पर आर्य साम्राज्य की स्थापना हो, मनुष्य मात्र भय, भ्रम, ढोंग, पाखंड, अंधविश्वास से ऊपर उठकर शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक स्तर पर सबल बनें, सब उन्नति, प्रगति और सफलता प्राप्त करें, सारा संसार आर्य बने, सभी के भीतर अभयता, संयम और सदाचार का समन्वय हो, सभी सत्य सनातन वैदिकधर्मी बनकर सुख, शांति, समृद्धि की अभिवृद्धि करें।

सत्य पर अडिग महर्षि के जीवन में कहीं पर भी अहम भाव के दर्शन नहीं होते, उन्होंने संसार का इतना बड़ा उपकार किया की स्त्री, पुरुष, बच्चे, युवा और वृद्ध हर आयु वर्ग को उन्होंने जीवन जीने की कला सिखाई। कल्याण की राह दिखाई, लेकिन किसी संस्था का नामकरण अपने नाम पर नहीं होने दिया और न ही कोई शिष्य अथवा शिष्या बनाकर उनके ऊपर अपने नाम की मोहर लगाई, उनकी तो एक ही वसीयत थी कि मेरी देह की अस्थियों को राख सहित किसी अज्ञात खेत में फेंक देना ताकि संसार मेरी कोई निशानी न ढूंढ पाए और मेरी पूजा न होने लग जाए। एक बार किसी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती से प्रष्न किया कि क्या आप विद्वान हैं या अविद्वान हैं, महर्षि ने सीधा सरल उत्तर दिया कि मैं विद्वान भी हूं और अविद्वान भी हूं। जिन- जिन विषयों की मुझे जानकारी नहीं है उनमें मैं अविद्वान हूं जिन जिन विषयों की मुझे जानकारी है उनमें मैं विद्वान हूं। आज अगर किसी से कोई पूछे कि आप इस विषय में जानते हैं तो आदमी ना जानते हुए भी अपनी योग्यता का बखान करने लगता है। इससे पता चलता है कि महर्षि सत्य ही करते थे, सत्य ही बोलते थे और सत्यमय जीवन ही जीते थे, ऐसे महापुरुष के महान कार्यों के विषय में योगी अरविन्द ने लेखमाला लिखी थी, तब उन्होंने महर्षि दयानन्द के नाम के साथ कोई ऋषि, मुनि, योगी आदि विषेषण नहीं लगाया, उनसे जब किसी ने इसका कारण पूछा तो उन्होंने कहा कि मैं जब-जब दयानन्द के नाम के साथ कोई विशेषण का प्रयोग करता हूं तो मुझे बड़ा अजीब लगता है, क्योंकि ऋषि दयानन्द का नाम अपने आप में पूर्ण है, इसके साथ कोई उपनाम लगाने से उनके नाम का अपमान है। वास्तव में संसार में ऋषि, मुनि, सिद्ध, साधक, सन्त, महात्मा, योगी तो अनेकानेक हुए हैं और आगे भी होंगे लेकिन दयानन्द सा महर्षि होना बडी बात है। महर्षि का जैसा नाम है वैसा ही उनका कार्य सिद्ध हुआ, महर्षि दयानन्द महान दयालु, कृपालु और धर्मात्मा थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका ने लिखते हैं कि आजकल बहुत से विद्वान प्रत्येक मतों में हैं, वे पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धांत अर्थात जो-जो बातें सब के अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरुद्ध बातें हैं उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से बरतें और बरतावें तो जगत का पूर्ण हित होवे। महर्षि के इस संदेश में संपूर्ण जगत के कल्याण की भावना निहित है, उनका मानना था कि जो प्रचलित मत हैं, संप्रदाय हैं उनमें भी विद्वान हैं और उन मतों में भी सर्वतंत्र सिद्धांत हैं,उनकी धारणा थी कि जो जो बातें सब मतो में एक दूसरे के अनुकूल और समान हैं उनका विद्वान प्रचार करें और जो-जो बातें प्रतिकूल तथा विरुद्ध हैं उनका प्रचार न किया जाए। महर्षि दयानन्द सरस्वती का किसी से कभी कोई द्वेष भाव नहीं था, उन्हें तो असत्य से घृणा थी क्योंकि वे हमेशा मनुष्य मात्र के हितैषी पक्षधर थे, इसलिए महर्षि के मानने वालों में हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, भारतीय और विदेशी सब लोग थे। महर्षि ने सबको आर्य बनने और बनाने सन्देश दिया, उन्होंने अपने ग्रन्थों में तथा प्रवचनों में आर्यजाति, आर्यावर्त, आर्यभाषा आदि शब्दों का ही प्रयोग किया, उनका गुजराती, संस्कृत और हिंदी भाषा पर अधिकार था, किन्तु उन्होंने देशी विदेशी भाषाओं को सीखने की प्रेरणा मानव मात्र को प्रदान की। महर्षि का दृष्टिकोण विस्तृत और व्यापक था वे सम्पूर्ण मानवजाति और मानवता के हितैषी और धर्मात्मा महापुरुष थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रतिभा असाधारण और अलौकिक थी, किंतु उनका सबसे बड़ा वैचारिक आंदोलन विशेष सिद्ध हुआ, उन्होंने मानव समाज में फैल रही कुरीतियों, ढोंग, पाखंड और अंधविश्वासों को दूर करने के लिए लगातार वैचारिक आंदोलन किए, समाज सुधार के लिए प्रत्येक विषय पर सत्य का प्रकाश किया। देश में चाहे आजादी की भावना का सूत्रपात करना हो, देश प्रेम जगाना हो, मनुष्य मात्र को सुपथ दिखाना हो, नारी जाति के ऊपर उनके उपकारो में चाहे विधवा विवाह प्रारंभ करना हो, सती प्रथा को बंद कराना हो, नारी को शिक्षा का अधिकार दिलाना हो, जातिवाद का भेद मिटाना हो, छुआछूत के रोग को दूर करना हो, अन्याय अनीति का नाश करना हो, उन्होंने बेबाक होकर के मानवता की रक्षा के लिए अपने वैचारिक संकल्पों की साधना की, वैदिक विचारधारा से जनमानस को परिचित कराया, उन्होंने मानव को मानव बनने की प्रेरणा दी और बताया कि वैदिक मान्यताओं को, सिद्धांतों को जानकर और मानकर ही उन पर चलने से मानव का कल्याण होगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी मानवजाति के महान उपकारक एवं परम हितैषी थे, क्षमाशीलता के महान उदाहरण थे, उन्होंने अपने प्राणघातक को दंडित करने व कराने का विचार तक नहीं किया, बल्कि उसे क्षमादान देकर, अभयता का दान देकर उपकृत कर गए, अपने प्रति किए गए बुरे व्यवहार, अपमान, तिरस्कार को सहकर भी वे सदा प्रसन्नता के साथ मुस्कुराए और दूसरों के दुःख को देखकर अपने आंसू नहीं रोक पाए, अपने बड़े से बड़े अपराधी के अपराध से खिन्न होकर भी उन्होंने प्रत्येक को आत्म कल्याण का आशीर्वाद दिया। शक्तिशाली होकर भी उन्होंने अपनी शक्ति का उपयोग किसी को कष्ट देने के लिए नहीं किया, वे दुष्टों को भी सन्मार्ग दिखाते रहे, कल्याण मार्ग चलने की प्रेरणा देते रहे, महर्षि के विचारों, शिक्षाओं को उनके उपदेश, संदेष, आदेश और निर्देशों को अपने जीवन में धारण करने का हम संकल्प लें, आर्य समाज के सेवाकार्यो को आगे बढ़ाएं, आगे बढ़ाते रहें और स्वयं आर्य बनकर संपूर्ण जगत को आर्य बनाने का सफल प्रयास करें, यही महर्षि की 200वीं जयन्ती पर कृतज्ञता होगी।

– *आचार्य अनिल शास्त्री*

आयोध्या में मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम मन्दिर का उद्घाटन

सोमवार 22 जनवरी, 2024 के अवसर पर

आर्यसमाजों, गुरुकुलों, शिक्षण संस्थानों में करें

विशेष यज्ञ-भजन-प्रवचन

भारतीय वैदिक संस्कृति के शिखर पुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जीवन सम्पूर्ण मानव जाति के लिए प्रेरणाओं का स्तम्भ है। 500 वर्षों से अधिक कालखण्ड के उपरान्त उनकी जन्मभूमि अयोध्या में भव्य और विशाल स्मारक (श्रीराम मन्दिर) का उद्घाटन समारोह 22 जनवरी, 2024 को माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा होना सुनिश्चित है। इस अवसर पर समस्त आर्यसमाजों, गुरुकुलों, शिक्षण संस्थाओं एवं आर्य से अनुरोध है कि अपने परिवारों एवं संस्थानों में यज्ञ, भजन और प्रवचनों के विशेष आयोजन करें। अपने संस्थानों और घरों को लाइटों एवं दीपमालाओं से सजाएं और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन से जुड़े प्रेरक प्रसंगों से मानव समाज को अवगत कराने का प्रयास किया जाए।

सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

धर्मपाल आर्य, प्रधान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

आओ चलें टंकारा – सम्पूर्ण विश्व

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की

200 वां जन्म स्मरणोत्स

महर्षि दयानन्द सरस्वती

10-11-12 फरवरी, 2024 (शनि-रवि-सोम)

माघ, शुक्ल पक्ष १-२-१ वि.२०८०

हम सबके जीवन का ऐतिहासि

आर्यजनों, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 20(द्विशताब्दी में सम्मिलित होने का अवसर किसी क ज्योति पर्व - स्मरणोत्सव महासम्मेलन को भव्य आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थानों, गुरुकुलों, विद्याल

आयोजन की उपरोक्त तिथियों 10-11-12 फरवरी में अपना कोई भी बड़ा आयोजन न रखें

समस्त साथियों, अधिकारियों, सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं सहित सपरिवार पहुंचने की तैयारी अभी से आरम्भ कर लें

महर्षि द जयन्ती व को सफ

टंकारा पहुंचने हेतु साधन, मार्ग एवं उपलब्ध व्यवस्था/सुविधाएं

हवाई मार्ग - टंकारा के निकटतम हवाई अड्डा राजकोट है। राजकोट हवाई अड्डे से टंकारा की दूरी 40 किलोमीटर है। दूसरा निकटतम हवाई अड्डा अहमदाबाद है जहां से टंकारा लगभग 250 किलोमीटर है। देश के लगभग सभी स्थानों / हवाई अड्डों से इन दोनों जगह की कनेक्टिविटी है तथा इन दोनों ही स्थानों से टंकारा पहुंचने का राजमार्ग बहुत अच्छा है। राजकोट का किराया काफी अधिक होगा। अतः अहमदाबाद की टिकट लेकर टैक्सी अथवा डीलक्स बस से पहुंचना भी एक सरल माध्यम हो सकता है।

रेल मार्ग - टंकारा पहुंचने के लिए सबसे निकटवर्ती रेलवे स्टेशन राजकोट ही है। यह स्टेशन टंकारा से 45 कि.मी. की दूरी पर है। यहां से टंकारा के लिए लगातार टैक्सी और सरकारी एवं प्राइवेट बसों की सेवा संचालित हैं। कार्यक्रम के दिनों में हमारा प्रयास होगा कि राजकोट रेलवे स्टेशन से टंकारा आयोजन स्थल तक सरकारी बसों की विशेष व्यवस्था हो जाए, जिससे और भी आसानी रहे। अतः तुरन्त रेलवे टिकट ले लें, चाहे कितनी ही वेटिंग में मिले। वेटिंग टिकट को 9311413920 पर भेजें, कन्फर्म कराने का प्रयास किया जाएगा

सड़क मार्ग - टंकारा से 500-600 किमी. की दूरी (गुजरात के निकटवर्ती - राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र) में रहने वाले महानुभाव अपनी-अपनी आर्य समाज/संस्था की ओर से बसों की व्यवस्था करके भी सामूहिक यात्रा का आयोजन कर सकते हैं।

भोजन व्यवस्था - टंकारा में आयोजन स्थल पर 9 फरवरी से 12 फरवरी की रात्रि तक भोजन की पर्याप्त व निःशुल्क व्यवस्था रहेगी। जो महानुभाव उसके अतिरिक्त अन्य व्यवस्था लेना चाहें उनके लिए सशुल्क स्टाल भी उपलब्ध होंगे, जिन पर व्यवस्थानुसार भोजन/नाश्ता/फास्टफूड/मिष्टान/आदि का आनन्द भी लिया जा सकता है।

आवास व्यवस्था - टंकारा पहुंचने वाले समस्त आर्यजनों, श्रद्धालुओं के लिए आयोजन स्थल के साथ-साथ स्थानीय विद्यालयों, धर्मशालाओं, समाजवाड़ियों (पंचायती विवाह केन्द्रों) जो बहुत साफ-सुथरे और बेहतर व्यवस्था वाले हैं, में प्रत्येक व्यक्ति के लिए बैडिंग की पूर्णतया निःशुल्क व्यवस्था की जाएगी।

-: निवेदक :-

सुरेशचन्द्र आर्य
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

पद्मश्री पूनम
दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा एवं

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती (उडीसा), धर्मपाल आर्य (दिल्ली), सुदर्शन शर्मा (पंजाब), राधाकृष्ण आर्य (हरियाणा), प्रकाश आर्य (म
भारतभूषण त्रिपाठी (झारखण्ड), योगमुनि (महाराष्ट्र), ऋषिमित्र वानप्रस्थी (कर्नाटक), जगदीश प्रसाद केडिया (बंगाल), संजीव
देवेन्द्रपाल वर्मा (उ. प्रदेश), अरुण चौधरी (जम्मू-कश्मीर), दीपक ठक्कर (गुजरात), सत्यानन्द आर्य (परोपकारिणी), अशो
सुरेन्द्र रैली (दिल्ली), विनय आर्य (दिल्ली)

ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति, महर्षि दयानन्द स

सभी पाठकों, अधिकारियों, सदस्यों, कार्यकर्ताओं से अनुरोध है कि सोशल मीडिया - व्हाट्सएप्प, फेसबु

में गूंजेगा दयानन्द का जयकारा – आओ चलें टंकारा

200वीं जयन्ती के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में

ोत्सव–ज्ञान ज्योति पर्व
य महासम्मेलन

। जन्मभूमि, टंकारा, जिला–राजकोट (गुजरात)

क अवसर – आइऐ, इस महान अवसर के साक्षी बनें

0वां जन्मोत्सव एक ऐतिहासिक अवसर है। किसी महापुरुष की जन्म शताब्दी अथवा ो भी जीवन में दोबारा प्राप्त होना सम्भव नहीं है। अतः इस अवसर पर आयोजित इस ज्ञान । एवं ऐतिहासिक बनाने के लिए समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, प्रमुख आर्य संगठनों, नयों, डी.ए.वी. संस्थाओं तथा व्यापारिक एवं औद्योगिक संस्थानों से अनुरोध है कि –

द्यानन्द सरस्वती जी की 200वीं के ऐतिहासिक स्मरणोत्सव समारोह ल बनाने में अहम् भूमिका निभाएं

अपना रेलवे आरक्षण तुरन्त करा लें, चाहे कितनी भी वेटिंग हो। वेटिंग टिकट को 9311413920 पर भेजें, ग्रुप में कन्फर्म कराने का प्रयास किया जाएगा

होटल/सशुल्क आवास व्यवस्था – टंकारा में स्थानीय एवं कुछ दूरी पर मोरबी और राजकोट में अच्छी क्वालिटी के होटलों की व्यवस्था है। जहां उपलब्ध सुविधाओं के अनुसार दो व्यक्तियों हेतु 1500/– रुपये से 5000/– रुपये राशि पर कमरे बुक कराए जा सकते हैं। होटल/सशुल्क आवास व्यवस्था प्राप्त करने हेतु **श्री अरुण प्रकाश वर्मा (9810086759)** एवं **श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता (9212082892)** से सम्पर्क करें। यदि आप होटल/ सशुल्क व्यवस्था में रहना चाहते हैं तो शीघ्र (अभी आधी राशि) भेजकर होटल के कमरे बुक करवा लें, शेष राशि यात्रा से पूर्व/टंकारा पहुंचते ही अवश्य जमा करा देवें।

गणवेश – सभी आर्यजन सफेद कुर्ता, पजामा–धोती और संतरी पगड़ी या टोपी पहनकर इस महत्वपूर्ण उत्सव के साक्षी बनें। महिलाएं क्रीम या पीली भारतीय परंपरा की साड़ी/वस्त्र धारण करके समारोह की गरिमा/शोभा बढ़ाएं। सम्पूर्ण यात्रा एवं समारोह में टोपी/पगड़ी/पीत–वस्त्र अवश्य ही धारण करके रखें। ओम का बैज या 200वीं जयन्ती के लोगो का बैज अवश्य लगा कर रखें।

मौसम – गुजरात में टंकारा क्षेत्र में इन दिनों मौसम बहुत सुहावना रहेगा। केवल रात्रि में हल्का गर्म स्वेटर आदि की आवश्यकता हो सकती है, अन्यथा दिन में पंखे आदि चलते हैं। तापमान 30 डिग्री और 25 डिग्री के बीच रहेगा।

भ्रमण – टंकारा यात्रा के दौरान जो महानुभाव सम्मिलित होते हैं, वे भ्रमण आदि के लिए भी जाना चाहेंगे तो आसपास दर्शनीय स्थान द्वारका, गिर के वन, स्टैचू आफ यूनिटी, चम्पानेर का किला, साबरमती आश्रम, रानी की वाव, पिरोटन इजलैंड, कच्छ का रण, जरवानी वाटरफाल, सरदार सरोवर डैम, खम्भेलिया केव्ज, रामपारा वाइल्डलाइफ सेंचुअरी हैं। वहां की भ्रमण व्यवस्था किसी ट्रैवल एजेंट से करवाई जा सकती है। आप अपनी यात्रा की ट्रेन आदि की बुकिंग करवाते समय इसका भी विशेष ध्यान रख सकते हैं।

एक अनुरोध – जिस महान आत्मा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर हम जा रहे हैं, उन्होंने न जाने कितने कष्ट उठाएं, हमें हमारा आज देने के लिए। अतः यात्रा में कुछ कष्ट सम्भव है, हमारी ओर से पूर्ण व्यवस्थाएं की गई हैं, फिर भी सम्भव है कि कुछ परेशानी या कष्ट हो। स्वयं को इस कार्यक्रम का आयोजक समझकर अपने सहयोगियों के साथ मिलकर व्यवस्थाएं बनाएं, ऐसा हमारा निवेदन है।

न सूरी, प्रधान
ं डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी

सुरेन्द्र कुमार आर्य
अध्यक्ष, ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति

. भारत), वेद प्रकाश गर्ग (मुम्बई), किशनलाल गहलौत (राजस्थान), सत्यवीर शास्त्री (विदर्भ), डॉ. रामकुमार पटेल (छत्तीसगढ़), वौरसिया (बिहार), महेन्द्र सिंह राजपूत (असम), डी.पी. यादव (उत्तराखण्ड), प्रबोधचन्द्र सूद (हिमाचल), एस. के. शर्मा (प्रादेशिक), क आर्य (उदयपुर), गोपाल बाहेती (अजमेर), जोगेन्द्र खट्टर (द.से.संघ), अजय सहगल (टंकारा), योगेश मुंजाल (टंकारा),

रस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, समस्त प्रमुख आर्य संगठनों एवं प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं में माननीय अधिकारीगण

क, एक्स, टेलिग्राम, ब्लॉग आदि पर इसका प्रचार करें और अपने संस्थान के नोटिस बोर्ड पर भी लगा दें

साप्ताहिक स्वाध्याय

सुधार की प्रारम्भिक दशा

(ई० 1863 से 1866 तक)

गतांक से आगे -

विद्याभ्यास समाप्त करने के अनन्तर महर्षि दयानन्द ने जो पहला सन्देश जनता को सुनाया, वह निराकार ईश्वर की उपासना का था। मथुरा से आप सीधे आगरा गए और यमुना के किनारे भैरव के पास लाला गल्लामल रूपचन्द के बगीचे में ठहरे। वहां अन्य सदुपदेशों के साथ-साथ मूर्ति पूजन का खण्डन बराबर जारी रहता था। महर्षि जी ने वहां पंचदशी की कथा प्रारम्भ की। उसकी 16वीं कारिका का उत्तरार्द्ध यह है- **मायां बिम्बो वशीकृत्य तां स्यात्सर्वज्ञ ईश्वरः** माया में चिदात्मा का प्रतिबिम्ब पड़ता है, वह माया को वश में कर लेता है और ईश्वर कहाता है। कहां निराकार ब्रह्म और कहां उसका प्रतिबिम्ब पड़ना! ईश्वर प्रतिबिम्ब मात्र है- तत्त्व नहीं। जिस महर्षि दयानन्द ने वेदों में **अकायमव्रणमस्नाविरं** इत्यादि शब्दों से विशेषित ब्रह्म का अध्ययन किया था, और ब्रह्म तथा ईश्वर एक ही चिदात्मा के नाम हैं- यह निर्णय किया था, उसे पंचदशी के ऐसे लेखों ने धक्का दिया। महर्षि दयानन्द ने उस समय से पंचदशी और अद्वैतवाद के अन्य ग्रन्थों को त्याज्यों की श्रेणी में लिख लिया।

जीवन-चरितों के लेखकों ने लिखा है कि इन पहले तीन सालों में महर्षि दयानन्द वैष्णव मत का खण्डन करते थे और शैव मत का प्रतिपादन करते थे। उस समय (और अब भी यही दशा है) मथुरा के आसपास वैष्णव सम्प्रदायों का बड़ा जोर था। मथुरा कृष्ण जी की पुरी है। वह वैष्णवों का गढ़ हैं। वहां रहते हुए आपने उस अन्ध परम्परा को देखा जो कृष्ण के नाम पर चलाई गई थी। रामानुज और वल्लभ-सम्प्रदाय की लीलाओं के देखने का भी आपको अवसर मिला। भागवतकार ने योगिराज कृष्ण के चरित्र को कई अंशों में कैसा बिगाड़ा है- यह भी आपने भली प्रकार देखा। इस कारण उस समय महर्षि जी के हृदय में वैष्णवों के विश्वासों के प्रति बड़ा क्षोभ था। वृन्दावन की लीलाएं उन्हें प्रेरित करती थीं कि वह वैष्णव मत का खण्डन करें।

आगरा से धौलपुर ठहरते हुए महर्षि जी ग्वालियर पहुंचे। वहां सिन्धिया की ओर से भागवत की कथा का प्रबन्ध हो चुका था। एक विद्वान् साधु आया है, यह सुनकर महाराज ने महर्षि जी को भी निमन्त्रण भेज दिया। महर्षि जी ने कहला भेजा कि भागवत की कथा से दुःख के सिवा कुछ न मिलेगा; यदि सुख चाहते हो तो गायत्री का पुरश्चरण कराओ। राजा यह सुनकर केवल हंस दिया। भागवत की कथा प्रारम्भ हो गई। महर्षि जी ने संस्कृत में भागवत के खण्डन में व्याख्यान देने आरम्भ किये। महर्षि जी कुछ समय भ्रमण और उपदेश में बिताकर जयपुर पहुंचे और वहां चार मास तक रहे। यहां आप उपनिषदों की कथा करते थे, और मूर्ति-पूजा का खण्डन करते थे। भागवत के खण्डन में जयपुर में आपने एक विज्ञापन भी प्रकाशित किया, जिसमें बतलाया कि भागवत के कर्ता व्यासदेव नहीं, अपितु बोपदेव नाम का पण्डित है, जिसने श्रीकृष्ण के निष्कलंक चरित को कलंकित कर दिया है। पुष्कर के मेले में पहुंचकर महर्षि जी ने रामानुज सम्प्रदाय का खूब खण्डन किया और कण्ठियां भी तुड़वाई। इस प्रकार स्वामी जी मूर्ति पूजा और अन्य सब कुरीतियों के विरुद्ध जो भयंकर तूफान खड़ा करने वाले थे, उसकी पहली चोटें वैष्णवों पर पड़ीं। प्रतीत होता है कि वैष्णवों के विरोध में प्रारम्भिक काल में वह कभी-कभी शैव मत का पक्ष ले लिया करते थे। उसके विषय में दो बातें ध्यान देने योग्य हैं। प्रथम तो यह कि अभी तक महर्षि जी का सुधार का पूरा प्रोग्राम बना नहीं था- बन रहा था। दूसरी यह बात कि स्वामी जी कहा करते थे कि शिव परमात्मा का नाम है, पार्वती के पति को मैं नहीं मानता।'

आपको गोरक्षा की प्रारम्भ से ही धुन थी। 1866 ई० के मई मास में महर्षि जी अजमेर पहुंचे, और बंसीलाल जी रिश्तेदार के यहां ठहरे। यहां आप मेजर ए०जी० डेविडसन कमिश्नर, और कर्नल ब्रुक असिस्टेंट कमिश्नर से मिले और उनके सम्मुख गोरक्षा का प्रश्न रखा।

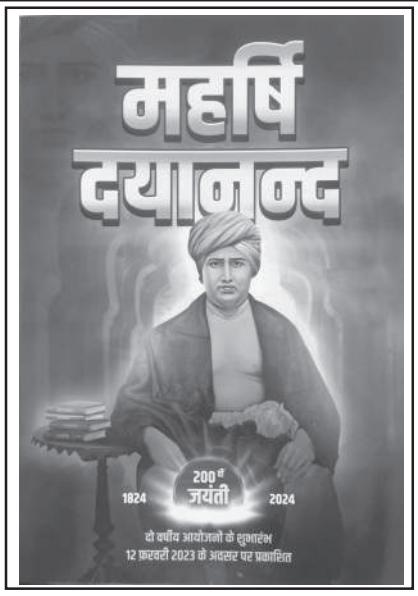

महर्षि जी ने उन्हें समझाया कि गौओं की हत्या बन्द करने से राजा और प्रजा दोनों का लाभ है। सरकारी अफसर तो सरकारी अफसर ही ठहरे। असिस्टेंट कमिश्नर साहब ने महर्षि जी को लाट साहब के नाम एक चिट्ठी लिख दी और कह दिया, आप लाट साहब से अवश्य मिलें। जिस साहब को आप मेरी चिट्ठी दिखाएंगे, वह आपसे अवश्य मिलेगा। सरकारी अफसर का मीठा इन्कार महर्षि जी ने शान्ति से अंगीकार कर लिया। यह महर्षि जी के हृदय की शुद्धता और सादगी का सबूत है। - ***क्रमशः***

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200वीं जयन्ती पर पुनःप्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

पृष्ठ 2 का शेष

सोशल मीडिया पर भी सज रही ....

ये तो हुई टेम्परेरी तौर पर माता आने की बात, वहीं बहुत से लोग स्थाई तौर पर खुद को देवी या देवता क्लेम करने लगते हैं। कई पुरुष भी ऐसा कर चुके हैं। 1971 बैच के आई.पी.एस. अधिकारी डीके पांडा खुद को राधा कहने लगे थे कि खुद भगवान ने सपने में आकर उनसे ये भेद खोला कि वे राधा थे।

वे राधा की तरह कपड़े पहनने और श्रृंगार करने लगे, माथे पर सिन्दूर और हाथों में चूड़ियां पहनने लगे थे।

अब इसे आप आस्था कह लीजिये लेकिन मेडिकल साइंस की भाषा में ये पजेशन सिंड्रोम है। इस सिंड्रोम के शिकार को ये लगने लगता है कि उस पर किसी देवी-देवता का वास है। कई बार लोग भूत-पिशाच जैसी बातें करते हैं, ये भी पजेशन सिंड्रोम का ही उदाहरण है। इस अवस्था में मरीज अपने नॉर्मल व्यवहार से हटकर हरकतें करने लगता है। कई बार अपराध भी करता है और बाद में क्लेम करता है कि ये सब आत्मा या देवी-देवता ने उससे करवाया। चूँकि यह धर्म और आस्था के नाम पर होता है तो लोग स्वीकार भी कर लेते है।

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ ने साल 1969 में दावा किया था कि इस सिंड्रोम का सीधा कनेक्शन मानसिक बीमारियों से है। एक संभावित मेंटल डिसऑर्डर यानि कभी नॉर्मल, कभी एब्नॉर्मल पर्सनैलिटी, दूसरा मल्टीपल पर्सनैलिटी डिसऑर्डर- आत्मा या देवी के आने का दावा। तीसरा साइकियाट्रिक बीमारी जैसे डिल्यूशनल डिसऑर्डर मनोचिकित्सकों के अनुसार देवी या देवता आने का दावा करने वाले ज्यादातर लोग वह होते हैं, जो किसी न किसी मानसिक परेशानी से जूझ रहे होते हैं। वे जब भक्ति के माहौल में जाते हैं, म्यूजिक उनके दिमाग पर असर करता है। जिससे वे ट्रांस स्टेट में पहुंच जाते हैं। ये एक किस्म का हिप्नोटिज्म है, जिसमें मरीज खुद से ही सम्मोहित हो जाता है। वो तंद्रा में आकर झूमने लगता है, या कुछ भी बोलने लगता है।

लेकिन जैसे ही म्यूजिक बंद किया जाता है, महिला या लड़की अपने आप झूमना बंद कर देती है। हालाँकि बहुत से लोग तो वाकई पजेशन सिंड्रोम का शिकार होते हैं, लेकिन कई शातिर लोग भी होते हैं, जो आस्था से खेलते हैं। वे खुद पर देवी या देवता आने का दावा करते हैं। यहां तक कि वे यह भी कह देते हैं कि उन पर हफ्ते से इस दिन तक देवी आती हैं। इस तरह से वे दुकान सजा लेते हैं और बाबा या माता बनने का ढोंग शुरू कर देते है। अब आप स्वयं समझ सकते हैं कि आस्था और अंधेपन में अंतर होता है। ये कथित बाबा, पाखंडी भूत-प्रेत के नाम पर परेशानी की नाम पर, आस्था के नाम पर, चमत्कारों के नाम शोषण करते हैं। अगर ईश्वर पर विश्वास है तो अंधविश्वास क्यों और अगर अंधविश्वास पर विश्वास है तो ईश्वर को दोष क्यों? - ***सम्पादक***

शोक समाचार

श्री जगमाल सिंह यादव जी का निधन

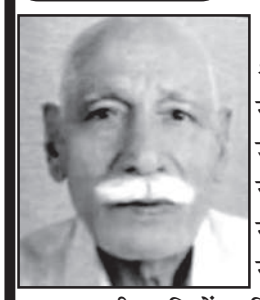

आर्यसमाज नांगल राया, नई दिल्ली के पूर्व प्रधान श्री जगमाल सिंह यादव जी का 3 जनवरी, 2024 की रात्रि में लगभग 99 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 4 जनवरी को प्रातः 11 बजे नानक डोला शमशान घाट में पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ, जिसमें निकटवर्ती आर्यसमाजों के साथ-साथ सभा अधिकारियों ने भी पहुंचकर अपनी श्रद्धांजलि दी।

उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 6 जनवरी, 2024 को आर्यसमाज नांगल राया नई दिल्ली में सम्पन्न होगी।

श्री विजय सचदेवा जी को मातृशोक

आर्यसमाज चूना मंडी, पहाडगंज के अधिकारी श्री विजय सचदेवा जी आर्य ट्रैवल्स की पूज्या माताजी एवं आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी के अधिकारी स्व. श्री बलदेव सचदेवा जी की धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता सचदेवा जी का दिनांक 26 दिसम्बर, 2023 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 29 दिसम्बर, 2023 को आर्य वाटिका, निकट आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी नई दिल्ली में सम्पन्न हुई, जिसमें निकटवती अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

Continue From Last Issue

Roar of Lion on Bank of Ganga

(From 1867-1869 A.D)

The people whose only source of income was 'Idol Worship', could not bear the above mentioned scene. Brahmans got angry. They tried to kill Swamiji. A Brahman gave Swamiji poison in betel (Paan). Swamiji came to know about it. He drew out the poison from his body by 'Nyoli Kriya'. Tehsildar of the city came to know about this incident. He arrested him and brought him before Swamiji to know from what type of punishment should be given to the culprit. The answer given by Swamiji is the key to Swamiji's views and life. That message is really required to be stamped in every one's heart. The answer was:-

"I have not come here to get the people arrested. I want all of them to be free from jail. If this man is not ready to give up his bad intentions, why should I give up my superiority?"

So, the Brahman freed after that with Swamiji's order. From Anup city Swamiji visited and delivered speech in Utrauli, Jalesar, Garhiya, Soron, Pilibhit, Shehbazpur, Kakorhe Ghat, Naroli, Kayamganj, etc cities and atlast reached Farukhabad. There were held debates and discussions on many of above places. Work of Prachaar continued non stop. There was a debate with Pandit Angad Shastri in Soron Pandit Angad Shastri was recognised greatly in this state. He was considered to be chief wrestler of his Dera. He could understand the truth of Swamiji's speeches after having debates with Swamiji for a long time. After that there was seen great reform in people's belief. They started throwing idols into the river. So called books related to God were thrown away in the basket of things to be thrown away.

When Swamiji was in Shahbaz pur, he heard the message of Swami Virjanand's death. He was great hurt. He was a true disciple and devotee of his Guru. He was proud of being his disciple of Dandiji. After hearing the sad news, he spoke suddenly the words "Sun of Vyakran has set today." Swami Dayanand's feeling of reverence for 'The Sun of Vyakram' was quite true. Whatever great work Swamiji had done for Dharm, its credit goes to Dandiji completely. It is true that all the power of Vidya and experience were present in Swami Dayanand, but still the credit goes to his qure as he had sown the seed of knowledge in Dayanand's mind and heart. There may be different views and experiences about Dandiji's nature as. "He was not a role model, There was no complete plan of reform in his mind." But his great wisdom (Panditya), his interest in Aarsh Books, his nature of not to follow the bad traditions etc were such qualities that had sown the seed of reform in Dayanand's heart and mind.

Swamiji stayed in Farrukhabad for a long time. He condemned the bad customs with full force. He also gifted Gayatri Mantra and Yagyopaveet to Brahmans. Pandit Gopal, whose courage was hundred times greater than ability, came for debate. How could he face the 'Shastrarth Guru'? He was defeated. But he did not lose courage. He moved to Banaras with great speed. He offered some money to Pandits for getting the process of Idol worship approved. He showed the letter of approval for Idol worship at the place of debate with great confidence but it did not become fruitful was all the people present knew the importance of system. He went to some Idol worshipper, Pandits. He asked him, "What is this" He replied "This is a letter for approval of 'Idol worship' to be signed. Then Pandit further asked, What is written in this letter?" He replied "Maharaj, Idol worship is a good system." Pandit did not read letter. He introduced a surti in his nose and sulpha in his mouth and signed the paper.

To be Continue.....

प्रथम पृष्ठ से आगे

और आर्य समाज की मान्यताओं को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य संभव हुआ है। लेकिन इस वर्ष जब महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती का भव्य, विराट और विशाल आयोजन उनकी जन्मभूमि टंकारा गुजरात में होना सुनिश्चित है, तब सम्पूर्ण विश्व में एक अत्यंत उमंग, उत्साह और उल्लास का वातावरण निर्मित हो गया है। इस वर्ष 10-11-12-फरवरी 2024 की तिथियां ऐतिहासिक होंगी, संपूर्ण विश्व में महर्षि की जयन्ती, स्मरणोत्सव की धूम होगी, महर्षि का अमर वैदिक संदेश, उपदेश, आदेश और उनकी जन कल्याण की भावना और कामना सकार होंगी, आर्य समाज की आवाज विश्व की आवाज बनेगी, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों की गूंज से संपूर्ण विश्व समुदाय आहलादित होगा, महर्षि का अमर अमर उदघोष "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के संकल्प से आर्यसमाज पुनः संकल्पित होगा, संक्षेप में कहें तो महर्षि की 200वीं जयन्ती, ज्ञान ज्योति पर्व, स्मरणोत्सव अद्वितीय, अदभुत और अनुपम होगा। भारत के कोने-कोने और विदेशों से आर्यजनों के काफिले टंकारा गुजरात पहुंचेंगे, वहां आर्यजनों के गले में पीतवस्त्र, हाथ में ओम ध्वज, सिर पर केसरिया पगड़ी और एक स्वर में महर्षि दयानन्द की जय-जयकार, आर्य समाज की अमरता और वेद की ज्योति जलती रहे, ओम का झंडा उंचा रहे के गगन भेदी नारे गूंजेंगे।

महर्षि की 200वीं जयन्ती आर्य समाज की नई क्रांति सिद्ध होगी, अपनी ऐतिहासिक विरासत को संजोकर आर्य समाज एक नया इतिहास लिखेगा, देश-धर्म को आगे रखकर पूर्वजों का अनुकरण करेगा। आर्य समाज हुंकार भरेगा, दयानन्द को याद करेगा, महापुरुषों के बलिदान को शत-शत नमन करेगा। वेद ज्ञान का घर-घर जाकर आर्य समाज प्रचार करेगा, अंधकार को दूर भगाकर मानवजाति का उद्धार करेगा।

इसी भावना और कामना को साकार करने के लिए, 12 फरवरी 2023 के उद्घाटन समारोह से भी अधिक विशाल आयोजन की विराट योजनाओं को टंकारा की पुण्यभूमि पर क्रियान्वित करने हेतु, यूं तो महीनों पूर्व ही तैयारियां प्रारंभ हो गई हैं किंतु 27 दिसंबर 2023 को टंकारा में आयोजन की रूपरेखा एवं संयोजना, संकल्पना को अमली जामा पहनाने के लिए आर्य समाज की आयोजन समिति के अधिकारी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चंद्र आर्य जी, टंकारा ट्रस्ट के मंत्री श्री अजय सहगल जी, दिल्ली सभा के महामंत्री, श्री विनय आर्य जी, उप प्रधान, श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, आर्य केंद्रीय सभा के महामंत्री, श्री सतीश चड्ढा जी, श्री हरि ओम बंसल जी, श्री सुरेश चंद्र गुप्ता जी, श्री विजेन्द्र आर्य जी, डॉ. मुकेश आर्य जी इत्यादि महानुभावों ने कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण किया और कार्य योजनाओं को विधिवत सफल बनाने के लिए कई बैठकें की। इस अवसर पर टंकारा के विधायक श्री दुर्लभ जी भाई देथरिया की अध्यक्षता में टंकारा एवं निकटवर्ती क्षेत्रों में टाइल, घड़ी एवं प्लास्टिक उद्योगों के अध्यक्षों और प्रबंधकों, विद्यालयों तथा समाज वाडियों के अधिकारियों, राजकोट एवं मोरबी के आर्य समाजों के अधिकारियों, टंकारा के निवासियों तथा क्षेत्र में नव युवक-युवतियों, कार्यकर्ताओं के साथ बैठकें की गई। उन्हें विशेष रूप से बताया गया कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने पूरी मानवजाति के ऊपर अनगिनत उपकार किए हैं, वे केवल भारत ही नहीं बल्कि विदेशों में बसे आर्य जनों और संपूर्ण मानव जाति के लिए आदरणीय हैं। उनके जन्मदिन का कार्यक्रम पूरे विश्व समुदाय के कल्याण का उत्सव है। इस अवसर पर स्थानीय संयोजकों की समितियों का गठन करने का भी कार्य प्रारंभ हुआ, जिनमें प्रमुख रूप से टंकारा के विधायक, आर्य समाज टंकारा के प्रधान श्री भगवान जी भाई , मंत्री श्री देव कुमार जी, श्री मावजी भाई दलसाणिया, श्री रमणीक भाई वड़ादिया, श्री जगदीश भाई पनारा, श्री महेश भाई भोराणिया, श्री अमृतलाल मेनपरा, श्री अरविन्द भाई खोखानी, आदि विभिन्न महानुभाव उत्तरदायित्व को संभालने के लिए उत्साहित दिखे। इस अवसर पर पूरे टंकारा और गुजरात में उत्साह की लहर चल रही है। सब लोग आने वाली 10-11-12 फरवरी की प्रतीक्षा कर रहे हैं और आर्य जगत से भी हर आयुवर्ग के लोग टंकारा पहुंचने की तैयारी कर रहे हैं।

- *सम्पादक*

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 01 जनवरी, 2024 से रविवार 07 जनवरी, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 04-05-06/01/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 3 जनवरी, 2024

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

आर्य समाज परली के सहयोग से

महर्षि दयानन्द द्विजन्मशताब्दी

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन,

श्रद्धानन्द गुरुकुल वार्षिकोत्सव एवं

पूज्य सोममुनिजी शताब्दी समारोह

दि. २,३ व ४ फरवरी २०२४ (शुक्र. शनि. रविवार)

स्थान : श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम, नंदागौल मार्ग,परली- वैजनाथ, जि.बीड

प्रतिष्ठा में,

* जानकारी हेतु *

राजेन्द्र दिवे - 9822365272

डॉ.नयनकुमार आचार्य - 9420330178

रंगनाथ तिवार - 9423472792

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

वर्ष 2024 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339
ऑन लाइन खरीदें
www.vedicprakashan.com

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की
200वीं जयंती पर शुभकामनाओं के बैनर
अपने घर, आर्य समाज और क्षेत्र में
अच्छे स्थानों पर लगवायें

साइज 3 x 2 फुट

मूल्य ₹250 में 25 बैनर

वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली
www.vedicprakashan.com / +91-9540040339

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह